IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11,S. Iss 07, 2022

पं. दीनदयाल उपाध्याय कृत उपन्यास जगतगुरु शंकराचार्य में निरूपित राष्ट्र

–डॉ. ओम मिश्र आचार्य, डी.लिट्. (अ.)
शोध निर्देशक, हिन्दी विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
-दीपक कुमार ,शोधार्थी हिंदी विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली

जगत्गुरु शंकराचार्य भारतीय संस्कृति के विराट समन्वयकर्ता थे। उन्होंने सनातन धर्म–संस्कृति में उस समय समन्वय कर जो कार्य किया था उसने उस समय के विश्व को, भारत को समन्वित करने का महान कार्य किया था। उन्होंने भारत में चारों दिशाओं में चार मठों की स्थापना इसी समन्वय के लिए की थी। उन्होंने उस समय जब यातायात के साधन न थे तब सम्पूर्ण भारत की पदयात्रा समन्वय स्थापन के लिए ही की थी।1वे केरल के कालड़ी जहाँ उनका जन्म हुआ था वहां से प्रारंभ कर काशी, हरिद्वार, ऋषिकेश, व्यासघाट, बछेली खाल, देवप्रयाग, श्रीक्षेत्र श्रीनगर, गढ़वाल, नंदप्रयाग, जोशीमठ बद्रीनाथ, केदारनाथ पहुंचे। उन्होंने वद्रीकाश्रम में ज्योतिर्पीठ, पश्चिम में शारदापीठ, दक्षिण श्रृंगेरीपीठ और पूर्व में जगन्नाथपुरी गोवर्द्धनपीठ की स्थापना की।2

पं. दीनदयाल उपाध्याय जगद्गुरु शंकराचार्य के समन्वयवाद से प्रभावित थे क्योंकि पं. दीनदयाल उपाध्याय के समय में भारत पाश्चात्य दर्शन से प्रभावित हो रहा था। अन्य धर्म आपस में एक–दूसरे की कमी बता रहे थे। अंग्रेजों से लड़ते समय भारतीय अंग्रेजों के खिलाफ थे उनके जाते ही भारतीय उनके ही व्यवहारों का अंधानुकरण करने लगे थे। उन्हें इससे अत्यनतद ुख था। ऐसी ही स्थिति का अध्ययन पं. दीनदयाल उपाध्याय ने जगद्गुरु शंकराचार्य के कार्यों में किया–''जगद्गुरु शंकराचार्य के समय में भी बौद्ध धर्म, जैन धर्म के अलावा अन्य मत आपस में जड़ रहे थे। आज की तरह पाश्चात्य विचारों की तरह उस समय बौद्ध राजाश्रय को प्राप्त कर अपनी मनमानी है कर रहे थे। पश्चिमोत्तर भारत में इस्लाम अपना विकृत रूप फैला रहा था तथा सिंध, पंजाब के इलाकों पर मुहम्मद विन कासिम के नेतृत्व में इस्लाम धर्म स्थापित हो अपना विकृत रूप फैला रहा था। सम्पूर्ण भारत में वैचारिक धार्मिक विचारों की लड़ाई चल रही थी। ऐसी स्थिति शंकराचार्य ने अद्वैत समन्वय वाद स्थापित कर भारतीय संस्कृति की महत्वा सिद्ध की थी।3

पं. दीनदयाल उपाध्याय जी ने जगद्गुरु शंकराचार्य के व्यक्तित्व व कार्यों का गहन अध्ययन किया था। पं. दीनदयाल उपाध्याय की इतिहास दृष्टि जगद्गुरु शंकराचार्य के समान ही थी। वे पूर्णतः जगद्गुरु शंकराचार्य के विचारों से प्रभावित थे। जगद्गुरु शंकराचार्य के विचारों की प्रासंगिकता के कारण ही उन्होंने अपने समय के भारतीय युवाओं को जगद्गुरु शंकराचार्य के विराट व्यक्तित्व एवं अद्वैत, समन्वय तथा कर्म सन्यास की शिक्षा देने के लिए 'जगद्गुरु शंकराचार्य' उपन्यास की रचना की।4 पं. दीनदयाल उपाध्याय ने जगद्गुरु शंकराचार्य को एक ऐसे ऐतिहासिक महापुरुष के रूप में देखा जो बौद्धधर्म व हिन्दू धर्म व अन्य धर्मों में समन्वय स्थापित करना चाहते थे। उन्होंने शंकराचार्य के दार्शनिक चिन्तन को ज्यादा महत्व नहीं दिया, बल्कि सांस्कृतिक चिंतन को ज्याद महत्व दिया।

जगद्गुरु शंकराचार्य ने वैदिक धर्म के विरोधियों का विरोध नहीं किया बल्कि उन्हें मुख्यतयः वैदिक परम्परा को अपनाने योग्य बनाया। सनातम धर्म में व्याप्त हो गयी अशुद्धियों को उन्होंने दूर किया यही थी उनकी इतिहास दृष्टि और धार्मिक–सांस्कृतिक, दार्शनिक, सामाजिक विचारों की एकात्मता। जगद्गुरु शंकराचार्य ने बुद्ध से पूर्व भारत की प्राचीन संस्कृति को व तत्कालीन संस्कृति को भारतीय परंपरा से पृथक नहीं माना।5उन्होंने बौद्धधर्म को भी भारतीय संस्कृति का अंग मानते हुए उसे अद्वैत का ही अंग माना तथा प्रस्तुत किया। उन्होंने गहन अध्ययन के उपरान्त स्पष्ट किया कि बौद्ध धर्म के अनुयायिओं को अपने देशवासी ही दुश्मन लगने लगे व विदेशी अक्रांता जो स्वार्थवश बौद्धधर्म अपना रहे थे वह उन्हें अपने लगने लगे थे। जगद्गुरु शंकराचार्य ने बौद्धधर्म में व्याप्त कुरीतियों को सबके सामने रखा। उन्होंने बौद्धों के मठों में व्याप्त संन्यासी परंपरा को तथा हिन्दु युवा संन्यासियों की आश्रम पद्धति को एक समान बताया है और भगवान बुद्ध को भगवान विष्णु का अवतार बताया तथा अद्वैत को भारतीय जनता के सामने प्रस्तुत किया। इसीलिए उन्हें प्रच्छन्न बौद्ध भी कहा जाता है।

पं. दीनदयाल उपाध्याय की इतिहास दृष्टि जगद्गुरु शंकराचार्य के प्रयत्नों को हिन्दू धर्म व बौद्धधर्म के निकटत्व के रूप में देखती है। पं. दीनदयाल उपाध्याय की इतिहास दृष्टि राष्ट्र एकात्मकता की थी जो विश्व एकात्मकता तक जाती है। जो उनके समय की सभी राजनीतिक पार्टियों की विचार धाराओं से पृथक थी। उनकी ऐतिहासिक दृष्टि, सामाजिक दृष्टि भारत की संस्कृति की महत्वा को समायोजित किए थी। उन्होंने भारत की

सांस्कृतिक गरिमा को प्रस्तुत करने के लिए विभिन्न भारतीय, भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक स्थलों का भी वर्णन 'जगद्गुरु शंकराचार्य' उपन्यास में किया है। इस रचना में उन्होंने भारतीय संस्कृति का गौरव गान किया है। उन्होंने वैदिक धर्म के चार आश्रमों के, अन्तिम आश्रम, संन्यास का अर्थ 'कर्म संन्यास' से लिया है। जगद्गुरु शंकराचार्य ने संन्यास की परिभाषा जो तत्कालीन बौद्धधर्म के लोगों ने बतायी थी उसका खण्डन किया था और बताया था कि संन्यास लेकर अपने कर्मों से दूर रहना संन्यास नहीं है, बल्कि संन्यास का अर्थ है ज्ञान प्राप्त कर उस ज्ञान का प्रयोग अलिप्त ढंग से राष्ट्र निर्माण कार्य के कर्म में करना है। समाज को सही मार्ग पर चलने का मार्ग बताना है। पं. दीनदयाल उपाध्याय ने जगद्गुरु शंकराचार्य उपन्यास में शंकराचार्य की माता आर्यवा के द्वारा भी यह बात स्पष्ट की है। पं. दीनदयाल उपाध्याय ने'जगद्गुरु शंकराचार्य' उपन्यास के माध्यम से यह भी निरूपित किया है कि अपने समय की राजनीतिक विकृति से निपटने के लिए संघ प्रचार को ज्यादा महत्व दिया जाना चाहिए और उन्होंने संघ के लोगों को संदेश दिया की गरीबों की सेवा करना ही महत्वपूर्ण कार्य है। उन्होंने जगद्गुरु शंकराचार्य के संन्यासी रूप को एक सच्चे संघ प्रचारक युवा के रूप में प्रस्तुत किया।5 उनका मानना था कि एक संघ प्रचारक को जगद्गुरु शंकराचार्य के रूप में अपने घरेलू कार्यों के बजाय राष्ट्र निर्माण कार्य को प्राथमिकता देनी चाहिए। वे ऐसे ही संघ युवा संन्यासियों का निर्माण करना चाहते थे। उनका मानना था कि यदि भारत में ऐसे ही संघ संन्यासी पैदा हो जाये तो भारत का कल्याण ही नहीं विश्व का भी कल्याण हो सकता है। उन्होंने जगद्गुरु शंकराचार्य को एक ऐसे संन्यासी के रूप में ही देखा था और इसी कारण उन्हें अपने उपन्यास जगद्गुरु शंकराचार्य का नायक बनाया था। उनका मानना था कि संसार के दुखी लोगों की सेवा करके ही महान कार्य किया जा सकता है। गरीबों की सेवा एक संन्यासी के लिए माया मोह नहीं है क्योंकि गरीबों के अन्दर भी ईश्वर का भी अंश होता है।6 अतः गरीबों में एकात्म अनुभव करना चाहिए। वे संघ के संन्यासियों के द्वारा राष्ट्र निर्माणकों का निर्माण करना चाहते थे। इसी कारण वे बचपन से ही बालक की शिक्षा पर बल देते थे। उनके यह विचार भी बालक जगद्गुरु शंकराचार्य के जीवन से ही प्रेरित है। जिससे प्रभावित होकर उन्होंने उपन्यास जगद्गुरु शंकराचार्य में नायक जगद्गुरु शंकराचार्य के बचपन के प्रकरण में निरूपित किया है। जिस समय पं. दीनदयाल उपाध्याय जगद्गुरु शंकराचार्य उपन्यास लिख रहे थे उस समय संघ में एक प्रश्न पनप रहा था कि भारत में

सांस्कृतिक निर्माण में जोर दिया जाये या फिर राजनीतिक निर्माण करके सरकार बनाकर देश को आगे बढ़ाया जाए। पं. दीनदयाल उपाध्याय ने जगद्गुरु शंकराचार्य के जीवन से प्रभावित होकर 'जगद्गुरु शंकराचार्य' उपन्यास का सृजन किया तथा सांस्कृतिक एकता में महत्व देश के लिए महत्वपूर्ण माना। राजनीतिक क्षेत्र में पार्टी की बढ़त को उसके बाद का प्रश्न माना। इस उपन्यास 'जगद्गुरु शंकराचार्य' को लिखने का लक्ष्य उन्होंने संघ प्रचारक के जीवन निर्माण को माना। संघ प्रचारक को कभी भी राष्ट्र निर्माण के लक्ष्य के अलावा कुछ नहीं दिखता। जब इस कार्य के लिए वह कांटों पर चलता है तो कांटे उसके लिए फूल बन जाते है। बौद्ध धर्म की कमियों को बताकर जगद्गुरु शंकराचार्य ने जिस प्रकार उसे सनातन संस्कृति का ही अभिन्न अंग बताया व वैदिक धर्म की कुछ कमियों को त्याग कर उसे कुछ पुष्ट बनाया और उसे स्थापित करने का समन्वित कार्य उन्होंने किया। उन्होंने अपने समय में में व्याप्त हिन्दू धर्म के विखराव को व भारत पर बृहत रूप से पाश्चात्य दर्शन के प्रभाव को शंकराचार्य के जीवन से प्रेरणा लेकर उसके माध्यम से सुधारने का प्रयास किया। जिस प्रकार जगद्गुरु शंकराचार्य ने भारतीय संस्कृति की महत्वा को सिद्ध कर अद्वैत, समन्वय की विराट स्थापना की उसी तरह पं. दीनदयाल उपाध्याय भी भारत को भौतिकतावाद, स्वार्थवाद से, पाश्चात्य संस्कृति से मुक्त कर एकात्म मानव दर्शन को स्थापित करना चाहते थे। इस प्रकार जगद्गुरु शंकराचार्य भारत के ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने अपनी छः वर्ष की आयु से ही भारतीय संस्कृति, अद्वैत के द्वारा समन्वय की विराट चेष्टा कर भारत के भविष्य को नया मार्ग दिखलाया था।7

संदर्भ सूची

1. दीनदयाल उपाध्याय संपूर्ण वाड्मय, खंड–एक, संपादक डॉ. महेश चन्द्र शर्मा.एकात्म मानवदर्शन अनुसंधन एवं विकास प्रतिष्ठान, प्रभात प्रकाशन–2016, दिल्ली।

2 वही.20

3.वही.23

4.वही.24

5.वही.27

6.वही 76

7.वही 75

8.वही 89

9.वही 98

10.वही. 99

IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper **© 2012 IJFANS. All Rights Reserved** UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 11,S. Iss 07, 2022